इल्ज़ाम तमाम रहे



हम पर जो इल्ज़ाम रहे ।
इक - दो नहीं , तमाम रहे ।

सफ़ाई में कुछ न बोले -
मौन हम सुबह - शाम रहे ।

न हंस सके , न रो सके हम -
महफ़िल में बदनाम रहे ।

पीते तो हम बहकते न -
हाथों में कब जाम रहे ।

पांवों में डली बेड़ियां -
रस्ते चाहे आम रहे ।

गीत जो लिखे हैं हमने -
नहीं किसी के नाम रहे ।

घर में सदा दम घुटा है -
रोशनदान हराम रहे ।

शब्द कैसे सफ़र करते -
बीच में जो विराम रहे ।

मरहम भी अब चीख पड़े -
दिल दर्द - ए - मकाम रहे ।

अशोक आनन , मक्सी

छत्तीसगढ़ी हाइकु

पहसा आय
सुरुज अउ चंदा
सोन चांदी के.

जोगनी कस
चमकत हावय
सोन पुतरी.

राधा किसन
चलावत हावय
मया मिशन.

चमचमले
तोर करधन ह
चमकत हे.

का नी भोगिस
धरम के खातिर
राजा हरीश.

कागा बोलथे
पहट पहट म
मुँह खोलथे.

रोये अगास
ओस बनके गिरे
देख ले घास.

चुनावी चर्चा
जोड़ तोड़ म खर्चा
धरे र पर्चा.

नी हे भरोसा
कब उड़ जही ये
प्राण पखेरू.

थल न कुल
मरयादा गावंगे
स्विमिंग पुल.



कृष्ण कुमार अजनबी
देवभोग गरियाबंद (छ. ग.)

दबाव

बाहरी बातों का दबाव
हमारे भीतर के द्वन्द
विचारों का तेज बदलाव
मुश्किल होता है संभलना।।

भीतर से हों कमजोर
दबाव का पड़ता जोर
भीतर सबल बनाना
दबाव को जो हराना।।

भीतर शक्ति पैदा कर
सोच को विशाल कर
शब्दों का सही चुनाव
देखना होगा कमाल।।

दबाव टिक ना पाएगा
देखना तुझ से हार जाएगा
फिर कभी हार ना मानना
डटकर मुश्किलों
का हो सामना।।

डॉ. नरेन्द्र कुमार बस्सी
बठिंडा पंजाब भारत

दो कप चाय और मेरी मर्जी...!!



तुम मिलने न आओ, ये तुम्हारी मर्जी, वादा तोड़ दो, ये भी तुम्हारी मर्जी।
मगर सुबह की पहली किरण से लेकर शाम की आखिरी साँस तक, तुम्हें अपनी साँसों में बसाए रखना, ये है सिर्फ़ मेरी मर्जी।

रात जब चाँद खामोश होकर मुस्कुराता है, हर ख्वाब में बस तुम्हारा ही चेहरा नज़र आता है।

तुम ख्वाबों में आओ या न आओ, तुम्हारी मर्जी, पर हर ख्वाब को तुम्हारे नाम कर देना, ये है मेरी मर्जी।

तुम चाय पर न आओ, ये तुम्हारी मर्जी, मैंने फिर भी दो कप चाय सजा रखी है।

एक मेरे लिए, एक तुम्हारी यादों के लिए, जो आज भी मेरे दिल में महफ़ूज़ रखी हैं।

उन्हीं यादों में बचपन की गलियाँ महकती हैं, कुछ खट्टी-मीठी बातें आज भी चहकती हैं।

सोचता हूँ, काश वही पल लौट आएँ, हम फिर से बेफ़िक्र होकर मुस्कुराएँ।

आ जाओ... दोस्ती का ही वास्ता दे रहा हूँ, पुराने लम्हों को फिर से जीने बुला रहा हूँ।

जो गिले-शिकवे हैं, उन्हें आज यहीं छोड़ देंगे, इन दो कप चाय के साथ हर फ़ासला तोड़ देंगे।

चाय पीने का बस एक बहाना बना लो, अपने दिल को फिर से मुस्कुराना सिखा दो।



आओ, अपनी मर्जी से मिलने चले आओ, इन दो कप चाय को आज मुकम्मल बना जाओ।

सूरज झा, पतरातु
7079966881

राष्ट्रहित



राष्ट्र-जनहित में सदा काम करें,
अपना हर पल देश के नाम करें।।

जन-जन का हित हो सदा,
ऐसा जग में कोई काम करें।।

धरा के कण-कण में तिरंगा फहरे,
ऐसी राष्ट्र-संस्कृति का प्रचार करें।।

बढ़ें नित्य भारत का गौरव,
ऐसा मन में सदा विचार करें।।

धूप-छाँव, बरसात में डटे जवानों का,
अंतर्मन से हम सब गुणगान करें।।

धूल-मिट्टी से सने किसानों के,
काम-दाम का सदा सम्मान करें।।

सत्कर्म-परोपकार की धारा बहे,
ऐसी शिक्षा का हम प्रसार करें।।

वंदे मातरम् - जय हिंद का उद्घोष कर,
वीर शहीदों का सपना हम साकार करें।।

लक्ष्मीनारायण सेन

शब्द

शब्द जीवन के गीत
गाते हैं

शब्द क्षितिज के
पार जाते हैं

शब्द हर सांस की
महक फैलाते हैं

शब्द पेड़ -पौधों में
लहराते हैं

शब्द नदी की लहरों संग
उछलते -कूदते हैं

दुर्गा प्रसाद झाला

दिखावे के दानवीर

माता-पिता को पानी न पूछें,भंडारे करवाते हैं,
भाई का हक़ मारकर बैठे,दानवीर कहलाते हैं।
घर के रिश्तों में ज़हर घोलकर,दुनिया को समझाते हैं,
कैसी यह सेवा की मूरत,जो अपनों को रुलाते हैं?

बूढ़े माँ-बाप की आहों से,जिनके आँगन भर जाते हैं,
मंदिर-मस्जिद में लाख चढ़ाकर,पुण्य कमाने जाते हैं।
जिन हाथों ने पाला-पोसा,उन्हीं हाथों को ठुकराते हैं,
दुनिया के आगे धर्म दिखाकर,खुद को श्रेष्ठ बताते हैं।

भाई के हिस्से की खुशियों पर,जो अपना महल बनाते हैं,
हक़ छीनकर अपनों का फिर भी,न्याय की बातें गाते हैं।
दौलत के तराज़ू में रिश्तों का,मोल लगाने जाते हैं,
खून के रिश्ते तोड़कर आखिर,किस मुँह से मुस्कुराते हैं?

दान वही है जो दुखियारे के,जीवन में सुख लाता है,
सेवा वही जो टूटे दिल को,फिर जीना सिखलाता है।
माँ-बाप की आँखों में आँसू,कौन-सा पुण्य कमाता है?
अपनों का हक़ मारने वाला,दानी कैसे कहलाता है?



याद रखो, इस जीवन का हर कर्म हिसाब चुकाता है,
झूठे यश का महल समय की आँधी में ढह जाता है,
किशन माँ-बाप की सेवा से ही,जीवन स्वर्ग बन जाता है,
जो घर में ईसानियत बाँटे,वही सच्चा दानी कहलाता है।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र 9226229318

विभाजन की नीति

भेदभाव की नीतियाँ, भले दिला दें वोट ।
प्रतिरोधों के अस्त्र फिर, करते भारी चोट ।।1।।

कानूनों से बाँटकर, क्यों सुलगाते आग ।
सत्ता की खातिर भला, यह कैसा अनुराग ।।2।।

अपनों को जो छोड़कर, चला गैर के साथ ।
वक्त पड़े तो कौन फिर, थामे उसका हाथ ।।3।।

नीति अगर प्रतिशोध की, कैसा देश विकास ।
द्वेष भाव के दौर में, खोया सब विश्वास ।।4।।

दूर सवर्ण से जो हुआ, सत्ता उनसे दूर ।
खोद रहे कानून से, अपनी कब्र हजूर ।।5।।

कम सवर्ण को आँकना, सत्ता की भूल महान ।
करवट बदले जब कभी, तोड़े सभी गुमान ।।6।।

बराबरी सबकी करें, मत छीनें अधिकार ।
प्रतिभा पर क्यों कर रहे, आरक्षण के वार ।।7।।

अवसर सबको दीजिये, सबका हो उत्थान ।
प्रतिभा का भी मान हो, बढ़े देश की शान ।।8।।

जाति देखकर बाँटते, जब अवसर-अधिकार ।
प्रतिभा फिर यह पूछती, कब होगा सत्कार ।।9।।



भेदभाव की नीति से, मिटे देश सम्मान ।
जाति-धर्म में बाँटकर, कभी न हो उत्थान ।।10।।

डॉ. राजेन्द्र कुमार अवस्थी
रोहतक

ग़ज़ल



जलाकर दीप अंतर में, अँधेरा मार दो मन का।
खुलेगा द्वार अंतर का, उजाला सामने होगा।।

बहाकर भाव की गंगा, पकड़ लो पाँव हनुमत का।
मिला देंगे हरी से वो, मिटेगा बंध जन्मों का।

चले जा राह पर वंदे , बुलाती है तुझे मंजिल,
बताओ बैठकर किसको, मिला उद्देश्य है उसका।।

धरें डग राह पर ऐसे, निशानी हो अमिट अपनी,
निशानी के बिना देखो, कहाँ सम्मान है किसका।

नहीं सामान्य नारायण, खुशी के दौर में जीना,
खुशी रहता वही जो खोजता सबमें स्वयं ही को।।

सदा ही दृष्टि सम रखना अगर खुद तौलना चाहो।
तराजू के बिना सम्यक वजन किसका मिला किसको।



नहीं बोले कोई भी तो, नहीं कुछ फर्क पड़ता है,
करों को जोड़ लो अपनें, हरी तत्काल बोलेंगे।।

रामजस त्रिपाठी
नारायण नारायण साहित्य शाला

अंकों से आगे बचपन...

किताबें जितनी कम हों,
उतना अच्छा हमें क्यों लगता?
उम्र के उस पड़ाव में,
क्यों पढ़ाई से दिल अलग रहता?

किताबें सामने, दिल मैदान में रहता,
मन न जाने क्या खुद से ही बातें करता!
अध्यापक के स्वर से ज्यादा,
मैदान का शोर क्यों अच्छा लगता?

अब जो उम्र बढ़ी तो समझ आया,
जिन पन्नों से कभी जी चुराया,
आज उन्हीं के हर अक्षर में,
बीते कल का साया है पाया।

अब मैदान भी खामोश दिखता है,
दिल फिर उन्हीं किताबों को ढूँढता है,
जो कभी बोझ लगती थीं भारी,
आज उन्हीं में बचपन बसता है।

कहते अध्यापक, कहते अभिभावक,
किस बात की कमी होती है हमसे?
अंक क्यों नहीं आप आगे बढ़ा पाते,
जवाब में मैं कुछ नहीं कह पाता।

रात-रात भर जागकर मैं भी तो पढ़ता हूँ,
हर सवाल की उलझनों से चुपचाप लड़ता हूँ।
कागज़ की लकीरों में शायद न दिखे वह ज़ोर,
पर सीखने की राह पर मैं रोज़ ही बढ़ता हूँ।

अंक तो बस गिनती हैं, ज़िंदगी का मोल नहीं,
हर समझ का तराजू तोलता हर बोल नहीं।
जो भीतर उगा है, वह कैसे दिख जाए बाहर,
हर बीज का फलना तो मौसम से ही होता है तय हर बार।



पर भीतर कहीं एक ममता
और फ़िक्र भी पलती है,
अध्यापक की आँखों में भी
एक आस जलती है।
वे भी तो चाहते हैं कि उड़ान
मिले ऊँची,
बस डर और उम्मीद में थोड़ी चूक हो जाती है।

ओंकार सरदीवाल हैदराबाद

संविधान दिवस

26 नवंबर 1949 को संविधान अपनाया गया था
26 जनवरी 1950 देश में,संविधान लागू हुआ था
हमारा संविधान सभी देशों से सर्वश्रेष्ठ संविधान है
हमको अपने देश के संविधान, पर बेशुमार गर्व है

गणतंत्र एक राजनैतिक सशक्त देश में प्रणाली है
शासकीय शक्ति जनता के हाथों मजबूत होती है
सरकारें यहां जनता जनार्दन द्वारा चुनी जाती है
सरकारो की जनता के प्रति जवाबदेही होती है

न्याय स्वतंत्रता,समानता वसुधैव कुटुंब भाईचारे
के मूल्यों का सम्मान करने का दिन शुभ ये प्यारे
भारतीय संविधान को,अंगीकृत करने का है दिन
देश गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ था इस दिन

लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना का शुचि दिन
भव्यता और देशभक्तिपूर्ण
उत्साह से पर्व का दिन
हमारी शान आन-बान-शान है,
देश का संविधान
सबको अपने धर्मानुसार गुजर-
बसर का दिनमान



रामसेवक गुप्ता, मकराना राजस्थान

सोना-चाँदी



सोना-चाँदी हुए क्रैश,बाजार में मचा हाहाकार है।
दोनों को नाज़ बहुत था, आज इन्हीं पर भार है।।
ऊँची उड़ानें भरने वाले, देखो धरती पर आ गिरे।
भावों के इस खेल में, कितने हुए यह शर्मसार है।।
बड़ी सोने की चमक थी, चाँदी को था अभिमान।
कीमतों के आसमान पर, करते रहे मालामाल है।।
बाजार ने करवट बदली, खड़ा किया एक सवाल।
कल तक थे अनमोल, आज हुए वही बेहाल है।।
निवेशकों की धड़कनें बढ़ी,
व्यापारी भी हैरान है।
किस करवट बैठेगा बाजार,
हर कोई परेशान है।।
किसी के चेहरे पर चिंता,
किसी के मन में आस।
मंदी की इस आँधी में, टूटा इनका सब मान है।।
धन का यह खेल निराला, कब किसका हो जाए।
आज शिखर पर जो बैठा, कल नीचे आ जाए।।
भाव सिखाता एक सबक, मत करना अभिमान।
बाजारों के सम इंसान, कब ऊंचा-नीचा हो जाए।।
सोना हो या हो चाँदी, बदलते वक्त के यह दास हैं।
चढ़ना-गिरना,गिरना चढ़ना, इनका रहा इतिहास है।
समझदारी से कदम बढ़ाना, यही समय की सीख।
लालच में इनके जो आता, होता उसका परिहास है।।



शिवलाल दाँगी अध्यापक
मोबा.8435408794

26/11/2008 मुम्बई आतंकी हमला

26/11 /2008 की घटना है
मुम्बई का आतंकी हमला था।

बेगुनाह लोग मारे गए थे
हाहाकार मचा हुआ था।

आतंकवाद बड़ी चुनौती है
देश की बड़ी समस्या है ।

पैसों के लिए जो ऐसा करते
कैसी ये आतंकी समस्या है ।

कानून व्यवस्था हो लचीली
उसका फायदा सभी उठाते हैं ।

आतंकी हो या दुष्कर्मी हों
कानून का फायदा लेते हैं ।

मनमाना पैसा ले करके
वकील साथ उनका देते हैं ।
एक कोर्ट से दूसरे कोर्ट में
सुप्रीम कोर्ट तक केश लड़ते हैं ।

हार-जीत चाहे जो भी है
केश उलझा कर रखते हैं ।
अपील पर अपील करते रहते
तारीख पर तारीख बढ़ाते हैं ।

आतंकी कानून से नहीं डरते हैं
कुछ नेता भी इनको सह देते हैं ।
कानून के हाथ भले लंबे हो पर
कानून के दायरे में ही रहते हैं ।

आतंकवाद से देश को ऐसी बड़ी
चुनौतियों का सामना करना होता है।
बम फोड़कर ये आतंकी कहीं भी
देश दुनिया में आतंक फैलाते रहते हैं
।

आतंकी जो देश प्रदेश ऐसे हैं
जहां पर आतंकी शरण पाते हैं ।
ट्रेनिंग पाकर फलते फूलते है
और अपना मकसद पूरा करते हैं।

काश्मीर में सबसे ज्यादा ही
आतंकवादी शरण पाते हैं ।
नेताओं की सह पाकर ही
आतंकवादी फलते फूलते हैं ।

आतंकवाद की समस्या का
पुख्ता इलाज होना चाहिए ।
पकड़ इन पर केश नहीं सीधे
फांसी पर लटका देना चाहिए।

इस आतंकी हमले में हुए
वीर शहीदों को प्रणाम करते हैं।
शत शत नमन वंदन करते है
श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं ।



डा अनन्तराम चौबे अनन्त जबलपुर

दौलत वाले की महफिल

शब्दों की फूलों को पिरोया मैं माला
कविता में ढल गई जज्बातों की हाला

गम का पी रहा हूँ जाम मैं सबह शाम
हालात ने कर दी जीवन जीना हराम

दुँद रहा हूँ अंधेरों में अपनापन की डोर
इंज्ञावत ने उलझा रखा है शाम से भोर

अकेलापन आज दस्तक दे हमें रूलाया
खोज रहा हूँ मैं रिश्तों की खुद की साया

दौलत के समन्दर ने मेरी प्रीत को डुबाया
धनवान बन गया अब प्रीत की छाया

मोहब्बत की तड़प में बीमार हूँ मेरे राम
कब होगी इस बीमारी से दिल को आराम

तन्हा रात ने खोल दी मन मंदिर की द्वार
सिसक रहा है ये बेचारा दिल जार जार

तल्ख व्यंग जग की बन चुभती है कटार
बेवफा से क्यूं किया जग में मैंने प्यार

काश ! ये दिन जवानी की ना यहाँ आता
बेवफाई की प्रकृति में भी समझ पाता

पैसे वालों की महफिल में दिल ना लुटाता
भरी जवानी में ये रोग मुफ्त ना घर आता

उदय कशीर साह,
मो. पो. जयपुर
जिला बांका बिहार 9546115088

जैसी हो, वैसी ही रहा करो

जैसी हो, वैसी ही रहा करो,
कसम से बहुत अच्छी लगती हो,
बिना किसी बनावट के जब मुस्कुराती हो,
तब सबसे ज्यादा खूबसूरत लगती हो।

माथे पे एक छोटी-सी बिंदी लगा लो,
सच कहूँ तो और भी सुंदरी लगती हो,
खुले बालों में जब सामने आती हो,
तो किसी कविता की पंक्ति लगती हो।

न जाने क्यों तुम्हें सजने-संवरने की इतनी चाहत है,
तुम्हारी सादगी में ही तो सबसे ज्यादा खूबसूरती है।
महंगे गहनों की तुम्हें कोई जरूरत नहीं,
तुम्हारी मुस्कान ही तुम्हारा सबसे खूबसूरत गहना है।

हल्की-सी काजल की रेखा आँखों में सजा लो,
माथे पर बिंदी और चेहरे पर मुस्कान लगा लो,
फिर देखना आईना भी तुम्हें देखकर शर्मा जाएगा,
और चाँद भी बादलों के पीछे छुप जाएगा।

तुम जब हँसती हो तो माहौल बदल जाता है,
तुम्हारी एक मुस्कान से दिल संभल जाता है।
तुम्हारी आवाज़ में भी एक अलग-सी मिठास है,
शायद इसी वजह से तुम सबसे खास हो।

इसलिए खुद को बदलने की कोशिश मत किया करो,
जैसी हो, बस वैसी ही रहा करो।
तुम्हारी सादगी ही तुम्हारी पहचान है,
और सच कहूँ तो उसी सादगी पर मेरा दिल कुर्बान है।



माथे पे बिंदी, चेहरे पे मुस्कान रखा करो,
बस इतना-सा मेरा कहना माना करो।
तुम्हें किसी और रूप में देखने की चाह नहीं,
जैसी हो, वैसी ही रहो
क्योंकि तुम उसी रूप में सबसे अच्छी लगती हो।

दीपक झा वत्स नवादा बेनीपुर दरभंगा बिहार

तुलसी

तिलक लगाया भाल पर, आकर के खुद राम।
धन्य -धन्य तुलसी हुए, सहज सिद्ध सब काम।।
सहज सिद्ध सब काम, आस की प्रभु ने पूरी।
दर्शन दे साक्षात, मिटा दी मन की दूरी।
पवनपुत्र का काम, कर्म को सफल बनाया।
%हिम्मत% खुशी अपार, राम ने तिलक लगाया।।1।।



गंगा-
गंगा में चाहे नहा, या कर चारों धाम।
मन में अगर विकार है, मिले नहीं फिर राम।।
मिले नहीं फिर राम, व्यर्थ ही जीवन जाए।
खाए यम की मार, कौन कह तुम्हें बचाए।
%हिम्मत% करो विचार, प्रथम करना मन चंगा।
अगर रहा बेदाग, कठौती में तब गंगा।।2।।

हिम्मत चौरड़िया प्रज्ञा कोलकाता, लाडनूँ

पल में वक्त बदलते देखे

पल में वक्त बदलते देखे, खोटे सिक्के चलते देखे,
मुश्किल वक्त कभी आया, अपने खास बदलते देखे।

जिनसे आस सदा लगायी, बुढ़ापे की बनेंगी लाठी,
नये दौर में अपने बच्चे, अन्त समय बदलते देखे।

छलके नहीं पिता के आँसू, हर मुश्किल में जज्ब किए,
बच्चों की रुसवाई से, आँसू खूब छलकते देखे।

जिनको घर में खोटा कहकर, रोज़ रोज़ दुत्कारा करते,
बुरे वक़्त में वही नालायक, अपनों के हित अड़ते देखे।

जब तक पैसा पास था अपने, गैरों के मेले लगते थे,
खाली हाथ चले सड़क पर, मुँह फेर सब चलते देखे।

डॉ. अ. कीर्ति वर्द्धन

अपेक्षाओं के कसौटी पर

सपने थे जो बड़े-बड़े, सब धरे के धरे रह गए,
मुद्दों के सब %मास्टरस्ट्रोक% बस हवा में बह गए।

लव जिहाद, धर्मांतरण और %यूनिफ़ॉर्म% की थी बात,
पर फ़ाइलों की अलमारी में सो गई हर सौगात।

गौ-रक्षा, घुसपैठ और अतिक्रमण का था जो शोर,
लगता है वो %एजेंडा% ही मुड़ गया किसी और ओर।

जनसंख्या की चिंता भी अब लग रही है पुरानी,
सवालों के बदले मिलती है बस %समय% की कहानी।

माँगा किसी ने? %यूजीसी% का नया ही कोई विधान,
बिना पुकारे आ टपका, बन गया नया फरमान!

ब्याह की उम्र बढ़ा दी, बोले अब ज़रा समझो यार,
पर बाकी फैसलों में दिखा कुछ और ही व्यवहार।

ठगों और अपराधियों पर दिखती है अजब नरमी,
और सरहद के रखवालों की सुविधाओं में भी कमी?

वाह रे नीति, वाह रे तर्क, क्या खूब किया कमाल,
लगता है %राष्ट्रवाद% की भी बदल गई है चाल।

हमने तो समझा था कि है %अपनी% ही यह सरकार,
पर अब तो हर फैसले पर उठने लगी है पुकार।



कैसे मानें कि यह धारा सनातन-राष्ट्र की है,